नामी संस्थानों के डिग्रीधारी पढ़ा रहे हैं गरीबों को

फोटो: जर्ग किशिवन कॉरकोरेट

टैमर लेविन

अमेरिका में 'टीच फॉर अमेरिका' बहुत बड़ी संख्या में ग्रेजुएटों के लिए उनका अगला कदम साबित हो रहा है। इस कार्यक्रम के तहत पढ़ाई पूरी कर कॉलेजों से बाहर आए ग्रेजुएटों को दो वर्ष तक गरीब ग्रामीण तथा शहरी स्कूलों में पढ़ाने के लिए भेजा जाता है। उन्हें उन स्कूलों के शुरुआती शिक्षकों के बराबर ही वेतन तथा अन्य लाभ मिलते हैं। यह कॉलेज की शिक्षा के बाद का एक जनहित कार्यक्रम है जिसमें वे लोग रुचि लेते हैं जो जीवन में कुछ कर दिखाने के लिए अपना रास्ता खोजने के साथ-साथ समाज को सुधारने के लिए भी कुछ करना चाहते हैं और अपने आत्मविवरण को भी प्रभावशाली बना लेते है।

इस वर्ष 'टीच फॉर अमेरिका' कार्यक्रम के लिए जॉर्जिया के स्पेलमैन कॉलेज की सीनियर कक्षा से 16 प्रतिशत, कनेटिकट की येल यूनिवर्सिटी से 11 प्रतिशत, वाशिंगटन डी.सी. की जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी से 10 प्रतिशत तथा मैसाच्यूसेट्स की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से 9 प्रतिशत आवेदन प्राप्त हुए। इसमें जातीय विविधता पर भी ध्यान दिया जाता है और इस वर्ष कुल नियुक्त ग्रेजुएटों में से 28 प्रतिशत अश्वेत हैं।

इस वर्ष 24,718 कॉलेज ग्रेजुएटों ने रिकॉर्ड संख्या में 'टीच फॉर अमेरिका' कार्यक्रम के लिए आवेदन किया। पढ़ाने के काम में अधिक पैसा नहीं मिलता। इसमें कोई ग्लैमर भी नहीं है। और, पढ़ाने के लिए जाने वाले युवाओं की शैक्षिक योग्यताएं भी बहुत ऊंची नहीं होतीं...।

कैलिफ़ोर्निया स्थित पनेटा इंस्टीट्यूट ने अप्रैल 2008 में एक सर्वेक्षण किया। यह लोक नीति का अध्ययन करने वाला एक निरपेक्ष संस्थान है। सर्वेक्षण के अनुसार पब्लिक स्कूल में पढ़ाने के इच्छुक विद्यार्थियों का प्रतिशत इस वर्ष गिरकर केवल 31 प्रतिशत रह गया है जबकि वर्ष 2006 में यह 45 प्रतिशत और 2007 में 36 प्रतिशत था।

लेकिन 'टीच फॉर अमेरिका' की बात कुछ और ही है। इसके सदस्यों के पास उच्चस्तरीय शैक्षिक योग्यताएं हैं, बच्चों के साथ काम का अनुभव है और परिणाम प्राप्त करने का संकल्प भी है।

'टीच फॉर अमेरिका' से जुड़े अधिकारियों को लगता है कि इसकी नियुक्तियों की सफलता के पीछे 9/11 के बाद की पीढ़ी की जन-सेवा तथा कम आय वर्ग के बच्चों की शिक्षा के स्तर को सुधारने का संकल्प है। 'टीच फॉर अमेरिका' की नियुक्तियों की वरिष्ठ उपाध्यक्ष एलिसा क्लैप का कहना है, ''आवेदनों की संख्या से हमें पता लग रहा है कि कॉलेज के विद्यार्थी इस बात में विश्वास करते हैं कि शिक्षा में असमानता हमारी पीढ़ी के लिए नागरिक अधिकारों का मुद्दा है।''

कई संगठित संस्थाओं के सदस्य जोर-शोर से शिक्षा के महत्व और इसमें श्वेत तथा अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के बीच की खाई को पाटने की बातें करते हैं। लेकिन, 'टीच फॉर अमेरिका' का विशेष आकर्षण यह है कि यह केवल 2 वर्षीय कार्यक्रम है और इस दौरान कहां रहेंगे, क्या कॅरिअर चुनें जैसे जीवन से जुड़े बड़े निर्णयों को किनारे रख सकते हैं। ये ऐसे फैसले हैं जिन्हें बीस से तीस वर्ष की उम्र के युवा लगातार टालते रहते हैं।

नैथन फ्रांसिस कहते हैं, ''मैं नहीं समझता, मेरे जैसे अधिकांश ग्रेजुएटों को पता होता है कि वे क्या करना

ऊपर: टीच फॉर अमेरिका कोर के सदस्य लेस्ली-बर्नार्ड जोसेफ वर्ष 2007 में न्यू यॉर्क सिटी के ब्रांक्स स्कूल में पढ़ाते हुए।

टीच फ़ॉर अमेरिका एक नज़र में

29: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की संख्या जहां कार्यक्रम उपलब्ध है।

6,000 से ज़्यादा: टीच फॉर अमेरिका कोर के सदस्य

14,000 से ज़्यादा: इससे जुड़े रहे सदस्यों की संख्या

425,000 से ज़्यादा: साल भर में लाभान्वित होने वाले विद्यार्थी

30 लाख लगभग: शुरुआत से अब तक विद्यार्थियों तक पहुंच।

स्रोत: http://www.teachforamerica.org/about/our_history.htm

वेंडी कोप

द न्यू यॉर्क टाइम्स से, कॉपीराइट © 2005 द न्यू यॉर्क टाइम्स, सर्वाधिकार सुरक्षित।

बैरी फ़िलिप्स © पी. सेक्स्टे सेक्स्टो पी.

बैरी फ़िलिप्स © पी. सेक्स्टे सेक्स्टो पी.

ज़्यादा जानकारी के लिए:

टीच फ़ॉर अमेरिका

http://www.teachforamerica.org/

अमेरिका के भविष्य पर फ़ोकस

www.panettainstitute.org/

शैक्षिक शोध के आंकड़ों के विश्लेषण का राष्ट्रीय केंद्र

www.caldercenter.org/

सबसे ऊपर: पाठ्यक्रम विशेषज्ञ मार्टिन विनचेस्टर ह्यूस्टन, टेक्सस में टीच फ़ॉर अमेरिका के प्रशिक्षण सत्र का संचालन करते हुए।

ऊपर: वाशिंगटन, डी.सी. की पॉवेल एलिमेंटरी स्कूल में तीसरी कक्षा की अध्यापिका एलिज़ाबेथ वेनेचक और इसमें भाग लेने वाले गणित की एक कक्षा में।

चाहते हैं। वे तमाम लोग जिन्होंने अभी-अभी ग्रेजुएशन किया है, कुछ करना चाहते हैं। इसलिए यह बहुत अच्छा लगता है कि करने को कुछ है, थोड़े ही समय के लिए सही, और इससे आपको अपने कॅरिअर के बारे में सोचने के लिए दो साल और मिल जाते हैं।'' उन्होंने 2004 में येल यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया और 'टीच फ़ॉर अमेरिका' के लिए चुन लिए गए। लेकिन, उन्होंने इस अवसर को छोड़ दिया क्योंकि उन्हें इस बात पर भरोसा नहीं था कि ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण मात्र से वह कम सुविधा प्राप्त विद्यार्थियों के अच्छे शिक्षक बन सकते हैं।

येल कालबैन ने येल के सीनियर के रूप में 2004 में कैंपस में परिसर में ही भर्ती का आयोजन करने में मदद की थी। वह कहती हैं कि उनके कई सहपाठी तो दो वर्ष का आश्वासन देने में भी डर रहे थे।

वह कहती हैं, ''हम लोगों से कह रहे थे कि यह अच्छा रहेगा और वे तय नहीं कर पा रहे थे कि दो वर्ष का वादा करें अथवा नहीं। तब हमने इस कार्यक्रम को पूरा कर चुके ग्रेजुएटों से कहा कि वे आगे आएं और बताएं कि वे 'टीच फ़ॉर अमेरिका' की ज़िम्मेदारी पूरी कर चुके हैं और अब वे मेडिकल स्कूल, लॉ स्कूल या आर्किटेक्चर स्कूल में हैं। और, दो साल का वक्त कोई ज़्यादा नहीं था। सच तो यह है कि इसने इन स्कूलों में प्रवेश पाने में उनकी मदद की।''

हालांकि 'टीच फ़ॉर अमेरिका' के दो-तिहाई ग्रेजुएट शिक्षा का ही क्षेत्र चुनते हैं, लेकिन अनेक आवेदक लंबे समय के लिए शिक्षण का कॅरिअर नहीं चुनते। असल में, उनमें से अनेक ग्रेजएट निवेश बैंकों तथा प्रबंध परामर्शदात्री संस्थाओं की प्रतियोगी परीक्षाएं भी देते हैं।

डार्टमाउथ कॉलेज कॅरिअर सर्विसेज के नियोक्ता संपर्क की निदेशक मोनिका विल्सन कहती हैं, ''यह ऐसी पीढ़ी है जो अपने विकल्पों को खुला रखना चाहती है। वे विद्यार्थी, जो कॉरपोरेट क्षेत्र का विकल्प खोजना चाहते हैं, उन्हें 'टीच फॉर अमेरिका' के रूप में अच्छा खासा विकल्प मिल जाता है। वे मार्केटिंग की कड़ी चुनौती स्वीकारते हैं और कैंपस में उनकी उपस्थिति महसूस की जाती है।''

राशेल क्रिंसेस ने 'टीच फ़ॉर अमेरिका' के बारे में तब सुना, जब वह यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिल्वैनिया में द्वितीय वर्ष की छात्रा थी। वह सीधे लॉ स्कूल में दाखिला लेना चाहती थी, लेकिन फिलाडेल्फिया में मिडिल स्कूल के विद्यार्थियों के लिए एक कार्यक्रम बनाते समय दो साल तक पढ़ाने के सुअवसर के बारे में जान कर उसे बड़ा सुखद कुतूहल हुआ।

गर्मियों में पांच सप्ताह का प्रशिक्षण लेकर क्रिंसेस ने मैनहट्टन, न्यूयॉर्क के पब्लिक स्कूल 123 में छठे ग्रेड की विशेष शिक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाया। वह सुबह 7.30 बजे आकर दिन भर पढ़ाने, स्कूल के बाद की बैठकों में भाग लेने और अन्य किसी भी ऐसी गतिविधि के लिए तैयार रहतीं जिससे विद्यार्थियों को पढ़ने और सीखने में मदद मिले। स्कूल खुलने से पहले उन्होंने

सुनहरे लिफाफे खरीदे और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए 'मैं हूं चैंपियन' कट-आउट मेडल तैयार किए।

वह कहती हैं, ''ट्रेनिंग के दौरान हमने उस अद्भुत शिक्षक के वीडियो देखे। उसका मिशन था: असंभव काम को हाथ में लेना और अधिक होमवर्क के लिए शोर मचाते विद्यार्थी। हम सब वहां बैठे-बैठे सोचते रहते, 'मैं कैसे ऐसी शिक्षक बन सकती हूं?' 'चैंपियनों की कक्षा' मेरा अपना विचार है। मैं इन बच्चों के लिए बहुत कुछ करना चाहती हूं ताकि ये खूब पढ़ सकें।''

'टीच फ़ॉर अमेरिका' कार्यक्रम का जन्म प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी की एक विद्यार्थी वेंडी कॉप की सीनियर थीसिस से हुआ। अपनी उस थीसिस में कॉप ने 'राष्ट्रीय शिक्षक कोर' बनाने का सुझाव दिया था। कॉप को इसे शुरू करने के लिए एक्सनमोबिल से तुरंत कुछ धन मिल गया। थोड़े से स्टाफ की मदद से उसने बुनियादी नियुक्ति अभियान शुरू किया। इससे उसे 500 शिक्षक मिले जिन्हें 1990 में छह क्षेत्रों में नियुक्त कर दिया गया। उसके बाद तो कारपोरेट सहभागियों, शिक्षा में सुधार चाहने वाले परोपकारी व्यक्तियों और अमेरिकॉर मदद से 'टीच फॉर अमेरिका' की तेज़ी से प्रगति हुई। इसकी ओर से दो वर्ष बाद शिक्षकों को 9,450 डॉलर की धन राशि दी जाती है ताकि वे शैक्षिक ऋण का भुगतान कर सकें अथवा आगे की पढ़ाई के काम ला सकें। लगातार अत्यधिक रुचि लेने से यह ग्रुप काफी लाभान्वित हुआ है। परिणामस्वरूप पीस कोर जैसी सुस्थापित संस्थाओं को भी रिकॉर्ड आवेदन प्राप्त हुए हैं।

'टीच फ़ॉर अमेरिका' कई स्कूली जिलों में लगातार लोकप्रिय हुआ है, जैसे न्यू यॉर्क सिटी में, जहां इस वर्ष इस ग्रुप के लगभग 1,000 सदस्य हैं। फिलहाल, 'टीच फॉर अमेरिका' के लगभग 3,700 सदस्य हैं जो लॉस एंजिलीस तथा बाल्टिमोर से अर्कान्सस डेल्टा और साउथ डकोटा के पाइन रिज लाकोटा सियोक्स रिजर्वेशन तक 29 क्षेत्रों में पढ़ा रहे हैं। यह ग्रुप केवल उन्हीं क्षेत्रों में पढ़ाता है जो संघीय सरकार द्वारा उच्च आवश्यकता क्षेत्रों के रूप में प्रमाणित होते हैं और अपंजीकृत शिक्षकों को नियुक्त करने के लिए सहमत होते हैं।

खैर जो कुछ भी हो, 'टीच फ़ॉर अमेरिका' मार्केटिंग की सफलता का उदाहरण है। न्यू यॉर्क सिटी में स्थित यह ग्रुप लगभग 400 कैंपसों में जाकर नियुक्तियां करता है और नियुक्तियों तथा चयन की प्रक्रिया पर अपने लगभग 12 करोड़ डॉलर के बजट का करीब एक चौथाई हिस्सा खर्च कर देता है।

अपने जूनियर तथा सीनियर वर्षों के दौरान हार्वर्ड में नियुक्तिकर्त्ता माइक कैलिन कहते हैं, ''टीच फ़ॉर अमेरिका हमारे लिए जो लक्ष्य निर्धारित करता है, उन्हें पूरा करने हेतु यह गहन भर्ती अभियान का काम किया जाता है।'' कैलिन साथ ही साउथ ब्रोंक्स में पढ़ाते भी थे। वह कहते हैं, ''मेरे कुछ साथियों को शायद यह लगा हो कि प्रथम वर्ष के दौरान मैं कुछ ज़्यादा ही उत्साही था। कुछ लोग थे, जिनसे हम संपर्क करना चाहते थे क्योंकि हम जानते थे कि वे बहुत अच्छे साबित होंगें। हमें इस बात से भी मदद मिली कि पिछले दो वर्षों के कक्षा-अध्यक्ष 'टीच फॉर अमेरिका' में आ गए।''

इस बात से भी मदद मिली है कि लगभग सभी कैंपसों में 'टीच फॉर अमेरिका' का बेहतर रिकॉर्ड है। वाशिंगटन डी.सी. स्थित 'अर्बन इंस्टीट्यूट एंड द सेंटर फॉर एनालिसिस ऑफ लांगिट्यूडनल डेटा इन एजुकेशन रिसर्च' ने एक अध्ययन के परिणाम सामने रखे। इस अध्ययन में हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर 'टीच फॉर अमेरिका कोर' के प्रभाव का पता लगाया गया था। पता लगा कि 'टीच फॉर अमेरिका' से इतर शिक्षकों, जिनमें अपने विषय के लिए पूरी तरह पंजीकृत शिक्षक भी शामिल हैं, की तुलना में 'टीच फॉर अमेरिका' के शिक्षकों का हाईस्कूल के छात्रों की उपलब्धियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

स्टैनफ़र्ड की लिंडा डार्लिंग-हैमंड तथा अन्य ने भी 2005 में ह्यूस्टन, टेक्सस में विद्यार्थियों की उपलब्धियों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया, हालांकि 'टीच फॉर अमेरिका' के शिक्षकों का शिक्षण कार्य अन्य अपंजीकृत शिक्षकों के समान ही रहा, लेकिन उनके परिणाम पंजीकृत शिक्षकों की बराबरी नहीं कर पाए। 'टीच फॉर अमेरिका' के अधिकारियों ने इस पर संतोष जताया कि अध्ययन में कमियां थीं।

अधिकांश अभिभावकों को पता नहीं है कि उनके बच्चों को 'टीच फॉर अमेरिका' के सदस्य पढ़ा रहे हैं, लेकिन न्यू यॉर्क सिटी के कुछ प्रिंसिपल कहते हैं कि उनके स्कूल में भेजे गए 'टीच फॉर अमेरिका' के सदस्य उन्हें बहुत भा रहे हैं।

***टैमर लेविन** द न्यू यॉर्क टाइम्स की राष्ट्रीय संवाददाता हैं।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

यूथ एक्सचेंज एंड स्टडी (यस) कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले अगस्त में अमेरिका जाने से पहले नई दिल्ली में अमेरिका के डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन स्टीवन जे. व्हाइट के आवास पर एक समारोह में। यस हाई स्कूल एक्सचेंज कार्यक्रम है जिसके लिए धन अमेरिकी विदेश विभाग प्रदान करता है।

हेमंत भटनागर